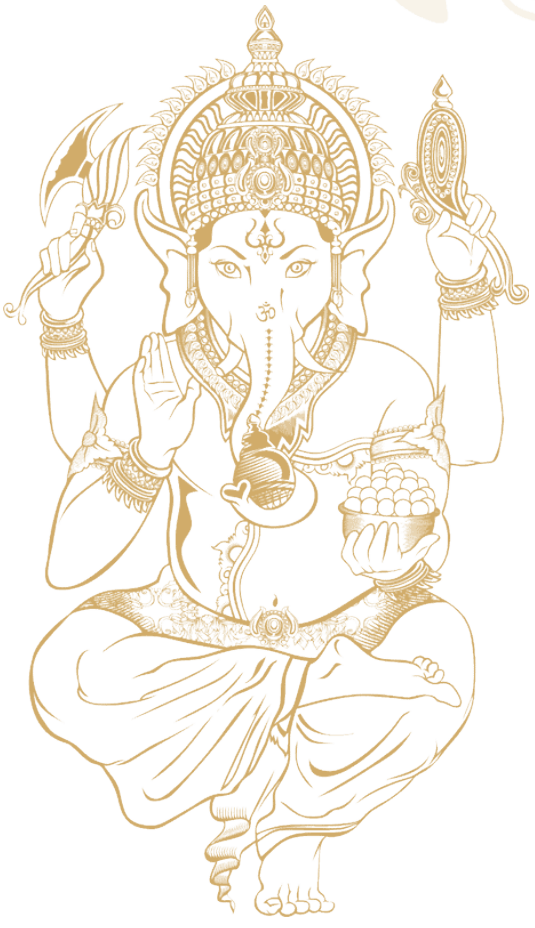

# S/O Suprim -Karishma Kala

06 Dec 2025

08:36 AM

Aurangabad

**Model: Baby-Horoscope** **Order No: 120463601**

**तिथि** 06/12/2025 **समय** 08:36:15 **वार** शनिवार **स्थान** Aurangabad **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:13
**अक्षांश** 19:52:00 उत्तर **रेखांश** 75:22:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:28:32 घंटे

| पंचांग | | अवकहड़ा चक्र | |
|---|---|---|---|
| साम्पातिक काल | 13:08:22 घं | गण | देव |
| वेलान्तर | 00:08:57 घं | योनि | सर्प |
| सूर्योदय | 06:50:24 घं | नाड़ी | मध्य |
| सूर्यास्त | 17:49:00 घं | वर्ण | शूद्र |
| चैत्रादि संवत | 2082 | वश्य | मानव |
| शक संवत | 1947 | वर्ग | मार्जार |
| मास | पौष | युँजा | पूर्व |
| पक्ष | कृष्ण | हंसक | वायु |
| तिथि | 2 | जन्म नामाक्षर | की-किशोर |
| नक्षत्र | मृगशिरा | पाया(रा.-न.) | ताम्र-स्वर्ण |
| योग | शुभ | होरा | गुरु |
| करण | तैतिल | चौघड़िया | शुभ |

**विंशोत्तरी**
मंगल 0वर्ष 0मा 24दि
मंगल
06/12/2025
31/12/2025
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
06/12/2025
चन्द्र 31/12/2025 सिद्धा

**योगिनी**
संकटा 0वर्ष 0मा 28दि
संकटा
06/12/2025
03/01/2026
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
06/12/2025
03/01/2026

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 13:17:05 | धनु | मूल | 4 | केतु | बुध | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 20:01:12 | वृश्चि | ज्येष्ठा | 2 | बुध | शुक्र | मित्र राशि | 0.97 | मातृ | पितृ | प्रत्यारि |
| चंद्र | | | 06:32:16 | मिथु | मृगशिरा | 4 | मंगल | चंद्र | मित्र राशि | 1.12 | ज्ञाति | मातृ | जन्म |
| मंगल | | अ | 28:53:23 | वृश्चि | ज्येष्ठा | 4 | बुध | शनि | स्वराशि | 0.90 | भ्रातृ | भ्रातृ | प्रत्यारि |
| बुध | | | 29:33:06 | तुला | विशाखा | 3 | गुरु | चंद्र | मित्र राशि | 1.41 | अमात्य | ज्ञाति | विपत |
| गुरु | व | | 29:57:04 | मिथु | पुनर्वसु | 3 | गुरु | चंद्र | शत्रु राशि | 1.46 | आत्मा | धन | विपत |
| शुक्र | | | 12:25:40 | वृश्चि | अनुराधा | 3 | शनि | मंगल | सम राशि | 0.80 | पुत्र | कलत्र | क्षेम |
| शनि | | | 00:59:40 | मीन | पू०भाद्रपद | 4 | गुरु | मंगल | सम राशि | 1.11 | कलत्र | आयु | विपत |
| राहु | व | | 19:17:11 | कुंभ | शतभिषा | 4 | राहु | मंगल | मित्र राशि | | --- | ज्ञान | सम्पत |
| केतु | व | | 19:17:11 | सिंह | पू०फाल्गुनी | 2 | शुक्र | राहु | शत्रु राशि | | --- | मोक्ष | वध |

## लग्न-चलित

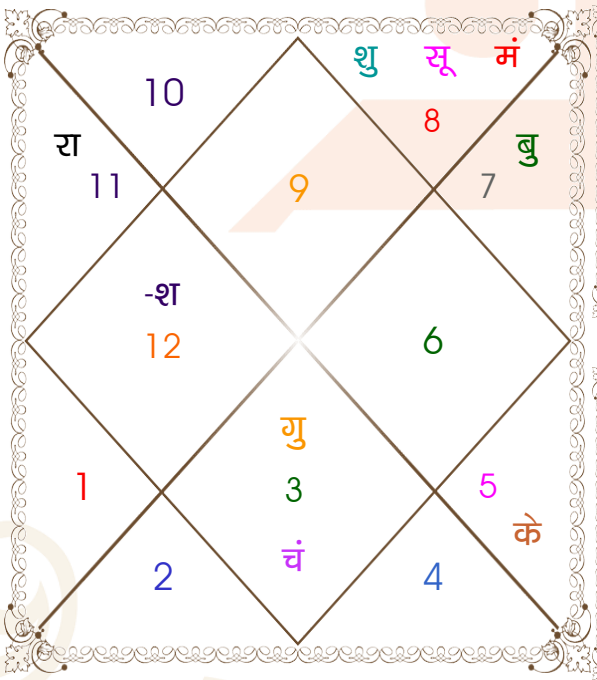




## चन्द्र कुंडली

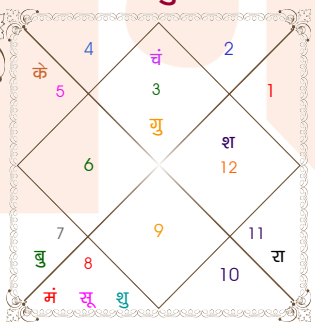




## नवमांश कुंडली

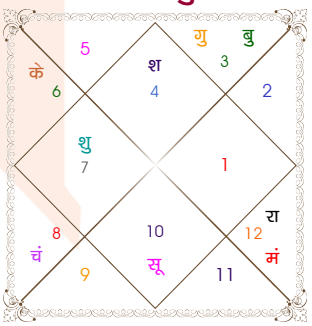




## सर्वाष्टकवर्ग

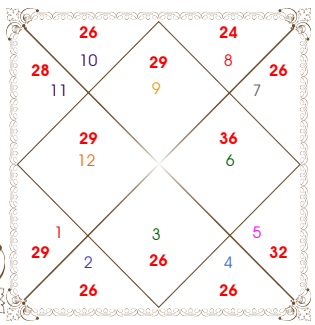




## दशमांश कुंडली

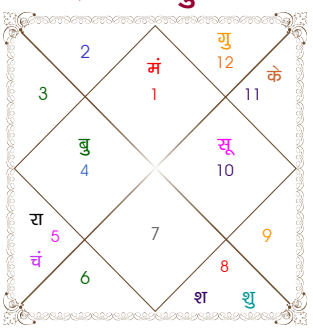





**Pulak Sagarm Hastrek ,Jyotish & Vastu Paramarsh kendr Dr. Hukum Chand Jain**
T-13, Cosmo Tower Jank Ganj Near Hanuman Chauraha, Gwalior pin 474001 M P
Mo 9425187186 ,9302614644
Astrodr. hcjain @gmail.Com

# नक्षत्रफल

आप मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, नाड़ी मध्य, गण देव तथा योनि सर्प होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "कि" या "की" अक्षर से होगा। यथा-किशोर, कीर्ति आदि।

आप में नैसगिक रूप से चंचलता तथा चतुरता का भाव विद्यमान रहेगा। आपके समस्त कार्य चतुराई तथा धैर्यपूर्वक प्रारम्भ होंगे तथा अन्त में इसी प्रकार सम्पन्न भी होंगे। आपको जीवन में कई बार व्यस्तता या अन्य कारणों से भूख से भी व्याकुल होना पड़ेगा। अहंकार के भाव की भी अनावश्यक अधिकता कभी कभी आप में उत्पन्न होगी। जिसके परिणाम स्वरूप आप अपने समक्ष दूसरे व्यक्ति को महत्वहीन समझेंगे।

**चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।**
**अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।**
**जातकदीपिका**

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, कूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

किसी भी वस्तु की प्रतिलिपि या नकली रूप बनाने में आप अत्यन्त कुशल हो सकते हैं। साथ ही अपने समस्त सांसारिक कार्यों को आप अपने परिश्रम तथा बुद्धि बल से ही सम्पन्न करेंगे।

**चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।**
**अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।**
**मानसागर**

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

आप स्वभाव से ही डरपोक रहेंगे। आप चतुर एवं विद्वान भी होंगे। आप हमेशा उत्साह युक्त रहेंगे तथा अपनी इसी उत्साही प्रवृति के कारण जीवन में उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगे। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक सुखों तथा धन एवं वैभव का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे।

**चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन,

वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग में आपको प्रवीणता प्राप्त होगी तथा इनके बारे में आपका ज्ञान भी विषद रहेगा। विनयशीलता आपके स्वभाव का अंग होगी तथा सामान्य रूप से सब के साथ नम्रता का व्यवहार करेंगे। गुण तथा गुणवान व्यक्तियों में आप विशेष रूप से अनुरक्त रहेंगे। धन का पर्याप्तार्जन होने के कारण विलासिता के प्रति आपका आकर्षण बढेगा। मंत्री वर्ग या उच्चाधिकारी वर्ग के भी आप प्रिय होंगे तथा इनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आप जीवन में अच्छे मार्ग पर चलने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे।

**शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।**
**भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

आप मन से हमेशा शान्त रहेंगे तथा भ्रमण एवं यात्रा के लिए अधिक उत्सुक रहेंगे। अतः आपका काफी समय भ्रमण तथा यात्राओं में व्यतीत होगा।

**चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।**
**जातकपरिजातः**

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुए हैं अतः आप के नेत्र अल्प लालिमा युक्त तथा काले होंगे तथा नासिका भी उन्नत होगी। नाना प्रकार के शास्त्रों के आप ज्ञाता होंगे। आप दूत या सन्देशवाहक के कार्य को भी करने वाले हो सकते हैं। सिर के बाल आपके घुघंराले होंगे। आप अत्यन्त ही तीव्र बुद्धि के पुरूष होंगे तथा समाज में लोगों के साथ आपका व्यवहार विनयपूर्ण तथा विनम्र रहेगा। अपनी इस तीक्ष्ण बुद्धि के द्वारा आप दूसरे लोगों की मन की बातों को शीघ्र ही जानने में सफल होंगे। आपके समस्त शारीरिक अंग स्वस्थ, सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। वाणी आपकी अत्यन्त मधुर होगी तथा हंसने हंसाने में भी आप कुशल होंगे। अधिक भोजन

करना आपको अच्छा लगेगा। संगीत तथा नृत्यशास्त्र के आप अच्छे जानकार होंगे।

**स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।**
**दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।**
**चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रुचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।**
**क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।**
**बृहज्जातकम्**

काव्य लेखन की प्रतिभा स्वाभाविक रूप से आपके मन में व्याप्त रहेगी अतः आप कवि या लेखक भी बन सकते हैं। अपने जीवन में आप समस्त प्रकार के सुखों का उपभोग करने वाले होंगे। आपका अधिकांश समय विषय वासनाओं के सुख में व्यतीत होगा। आपकी नसें भी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी। देखने में अत्यन्त ही सुन्दर होंगे। आप सौभाग्य से युक्त सौभाग्यशाली पुरुष होंगे। आप प्रिय एवं मधुर वाणी बोलेंगे जो सबको सुनने में अच्छी लगेगी। आपकी आकृति लम्बाई में अधिक होगी। आप हमेशा स्त्री जाति के वश में रहेंगे तथा एक प्रकार से पराजित रहेंगे।

**उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।**
**हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।**
**कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।**
**याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।**
**सारावली**

आयु आपकी पूर्ण रहेगी तथा आजीवन आप हास्य प्रिय रहेंगे। साथ ही आपकी प्रवृति भ्रमणशील भी रहेगी तथा घर में रहकर भी आप आनन्द तथा सन्तोष प्राप्त करेंगे।

**दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।**
**जातकपरिजातः**

समाज में आपकी मित्रताक्षेत्र अति विस्तृत होगा। बहुत से लोग आपके मित्र होंगे। आपकी हथेली में मत्स्य रेखा होने का भी योग बनता है। स्त्री जाति के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे तथा पूर्ण रूप से उनके वश में होंगे। अपनी सज्जनता एवं बहुमुखी योग्यता से आप समाज में मान, सम्मान तथा गौरव प्राप्त करेंगे।

**प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।**
**मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।**
**जातकाभरणम्**

आपका शरीर कोमलता लिए हुए पूर्णरूपेण स्वस्थ एवं पुष्ट रहेगा। आप यद्यपि श्लिष्ट भाषा या शब्दों का प्रयोग करेंगे। फिर भी स्पष्ट अर्थ वाले होंगे। आप अपने लोगों तथा समाज के अन्य लोगों की सेवा तथा सहायता में हमेशा व्यस्त रहेंगे। आप पितकफ युक्त प्रकृति से युक्त होकर हमेशा श्रेष्ठ आचरण का प्रदर्शन करेंगे।

**मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।**
**परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।**
**प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।**
**भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।**
**जातक दीपिका**

आपकी वाणी हमेशा अन्य लोगों को प्रसन्नता प्रदान करने वाली होगी। आखों में आपकी चंचलता विद्यमान रहेगी। आपको नृत्य तथा संगीत अत्यन्त ही प्रिय लगेगा तथा इसके आप ज्ञाता भी होंगे। अपने धनैश्वर्य, दयालुता, तथा सद्व्यवहार के कारण आपका यश दूर दूर तक फैलेगा। आप दीर्घाकृति के गौरवर्ण के पुरूष होंगे। आप भाषण देने की कला में भी निपुण रहेंगे तथा एक बार जिस बात का दिमाग में निश्चय कर लेंगे उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगें साथ ही न्याय में भी आपका विश्वास रहेगा।

**मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।**
**गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।**
**गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।**
**समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।**
**मानसागरी**

देवगण में पैदा होने के कारण आप श्रेष्ठ एवं मधुरवाणी से युक्त होंगे। सभी लोग आपकी वाणी की प्रशंसा करेंगे। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगे तथा सदैव सत्य भाषण ही करेंगे। आप सुगमता से अपने विचारों को व्यक्त करने में समर्थ होंगे तथा उतनी ही सुगमता से अन्य के विचारों को ग्रहण करने की क्षमता आप में होगी। शुद्ध तथा सात्विक भोजन आपका प्रिय भोजन होगा। आप गुणों से युक्त गुणज्ञाता होंगे। विद्वानों द्वारा कहे गये समस्त सद्गुणों से आप युक्त रहेंगे। धन एवं वैभव का अतुल भण्डार आपके पास हमेशा रहेगा जिससे धन धान्य का अभाव नहीं होगा।

आप सुन्दर दर्शनीय एवं स्वस्थ शरीर के स्वामी होंगे। दान देने की प्रवृति नैसर्गिक रूप से आप के अन्दर विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार यथाशक्ति आप इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप सरल हृदय से युक्त होंगे तथा छल या दिखावे से हमेशा दूर रहेंगे। आप समाज में एक विद्वान के समान पूजनीय भी समझे जाएंगे।

**सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।**
**जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आपका जन्म सर्प योनि में हुआ है। अतः आप कभी कभी अत्याधिक क्रोध करेंगे। साथ ही आप में चंचलता का बाहुल्य रहेगा अतः समस्त कार्य भी चपलता से ही होंगे। इसके अतिरिक्त आप जिहवा से भी स्वादलोलुप रहेंगे तथा विभिन्न प्रकार के स्वादों के आप प्रेमी होंगे।

**दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।**
**चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त

होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ रहेंगे। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें।इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही हरा वस्त्र, पन्ना, घी, गुङ, गेहूँ, मिश्री इत्यादि पदार्थो को दान करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में कमी होगी तथा मानसिक शान्ति भी प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

**ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।**
**मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।**